

एतच्चोऽज्ञाततथा ॥ अग्निं ह
 रतुं विप्रदक्षिणीकृत्य ॥ वा कर्णपू
 र्यते ॥ अग्निस्थापनमुमुहूतं
 मस्तु ॥ ॐ मयि गृह्णाभ्यर्च्यते
 अग्निं हराय येषां षायसु पृथक्
 रत्वा यमुदीर्यते ॥ आमुदेवतः
 न च नाम स्वस्ति व्याजः ॥ ॥ अग्निं
 स्थापनं ॥ ॐ स्वस्ति नो मिमांसा
 न ठेत् ॥ ॥ ईश्वानेमुते नो मिमांसा
 न ठेत् ॥ ॐ ममार्शिते च
 शांता दयामि सोमस्वारा ॥ अग्निं
 तेनामुवस्त्राम् ॥ उरोर्ध्वरीयो च
 इरास्ते कुरीतु जयन्त नवीन
 देवामदन्तु ॥ ॥ अग्निं सम
 न् ॥ ॐ पृथ्वी दिवि पृथिवी ॥ अग्निं
 अग्निः पृथिवी अग्निः पृथिवी ॥ अग्निं
 उषधीरा दिवे ॥ ॥ अग्निं

६: सह सा प षे ५ अग्निः सतो
दिवा स र्षिष्वा तु नक्तम् ॥ ॥
अग्निं प र्षिष्वा ॥ = अग्निं वेदादि च
तुर्वेदा सनं कु शा क्षतेन ॥ ३ं
अग्निं वेदा य इद मा सनं नमः ॥ ३ं
यजुर्वेदा य इद मा सनं २ ॥ ३ं
सामवेदा य इद मा सनं २ ॥ ३ं
यजुर्वेदा य इद मा सनं २ ॥
समिधु पत्रं धि क्षाय प्रत्येकं
॥ पूर्वे ५ अत गा त नं ॥ ३ं अग्नि
मीडे पुरो हितं यज्ञ स्य देवमृ
त्यु जं ॥ शीतारं रत्न धात न ॥ ३ं
इषे तो प्रे त्वा ॥ ३ं अग्नि ५ आ
या हि वीत मे ग हा नो रु वना
हने ॥ त्रि ति ता स सि व हि मि ॥
३ं स न्ने दे वी र मि ष्य ५ आ मे
भवतु पी त मे ॥ शं यो र मि स

वत्तु नः ॥ ३ं अग्निं वेदा य अ
ग्निं गो चा य सो म दै व ता य च
इद मे नमः ॥ ३ं यजुर्वेदा य
भार वा ज गो चा य ब्र ह्म दै व ता
य तृ कु ष्ण दै व से ॥ ३ं सामवे
दा य का र्ण प गो चा य रु द्र दै व
ता य ज ग ती इद मे ॥ ३ं अग्नि
र्वेदा य वेदा न स्य गो चा य इ
द दै व ता य अतु कु ष्ण दै व से
॥ ३ं शदि पू जनं ॥ ३ं इन्द्रा य वा
हना य गज वा हना य सुरा वि
पतये ॥ ३ं अग्नि ये शक्ति रु
क्ता य वा सा स ना य ते जो वि
पतये ॥ ३ं यमा य द रा उ रु
क्ता य म हि षा स ना य प्रे ता य
पतये ॥ ३ं नै रुक्ता य त्व ष्ट रु
क्ता य न र वा ह ना य रा दा सा

धि पतये ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हस्ताय मकरासनाय जलाधिपतये ॥
पतये ॥ ॐ कायके ध्वज हस्ताय
मृगकाहनाय जवनाधिपतये ॥
ये ॥ ॐ कुक्कुटाय गदाहस्ताय म
न्त्रकाहनाय कलाधिपतये ॥
॥ ॐ ईशानाय त्रिशूलहस्ताय
कृष्णभासनाय सर्वभूताधिप
तये ॥ ॐ शुक्लसेवकहस्ता
य कूर्मासनाय पातालधि
पतये ॥ ॐ उग्राय कर्मण्डल
हस्ताय हंसकाहनाय स्रगा
धिपतये ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
पूजनं ॥ ॐ स्वर्गाय ॥ ॐ मन्त्राय
॥ ॐ पातालाय ॥ ॥ द्विसं
विंशती सं ॥ ॐ एकं ॐ कारेण
स्वर्गाय ॥ एकं तूष्णीं ब्रूया
त् ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

ॐ एषो ह देवः यदि शो नु स
र्वः पूर्वे रुजा तः सः उ ग प्रः
प्र तः सः ए न जातः स जनिष्य
मा ताः प्रत्यङ्ग नाः ना सि द्ध तिः
सर्वं मे पुरः ॥ ॥ कुराता गोपी
त ब्रूयोन द्वे मण्डलं सिखित् ॥
ॐ ब्रह्म रो इदं मा स नं नमः ॥ ॐ
प्रणीताय इदं मा स नं ॥ ॐ
स्वात्मा सनाय ॥ इति ब्रह्म
स नं ॥ ॥ ब्रह्मा पूजनं ॥ ॐ हि
रण्यगर्भः स प्रवर्तता गेभू
तस्य जातः पतिरेकः ॥ ग्रासी
त् ॥ स जगत् पृथिवी आमु
ते मां कस्को देवाय हविषा
विक्षेप ॥ ॥ प्रणीत पूजनं ॥ ॐ
इदं विष्णुः ॥ ततः प्रणीत पूजनं
लेनं ॥ ॥ शुभं धनं ॥ देवस्य का

॥ ॥ प्रतप्यरां ॥ ॐ प्रसुह ६
 रक्षः प्रसुह ५ अरातयोनि
 ह्यप्र ६ रक्षो निह्य प्रा ५ अरा
 तयः ॥ कुशेन संमार्जनं ॥ ॐ
 अनितितोसिसपत्रक्षिदा
 जिनत्वावाजेध्यायेराम्मा
 जिर्म ॥ ॥ आपः पूरतां ॥ ॐ
 आपो हि ह्यमयो ॥ ॥ ततः
 पूजनं ॥ ॐ ब्रह्मरोनमः ॥ ॐ प्र
 जापतये २ ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवे
 भ्यो २ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥
 प्रणीतपूजनं ॥ ॐ विष्णवे नमः
 ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ प्रभ्यो २ ॥
 ॐ ब्रह्मराय २ ॥ ॐ प्रपापतये २
 ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥ ॥ कुराडर
 क्षितो ब्रह्मास्थापनं ॥ ॐ आ
 ब्रह्मचासरो ॥ ॥ कुराडोत्र
 रे प्रणीतस्थापनं ॥ ॐ विष्णो
 रतमसि ॥ ॥ पुनः पूज

ने ॥ ॐ ब्रह्मरो २ ॥ ॐ प्रजापत
 ये २ ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो २ ॥ ॐ
 ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ ॐ विष्णवे २
 ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ प्रभ्यो २
 ॥ ॐ ब्रह्मराय २ ॥ ॐ प्रपापतये
 २ ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥ ॥ कुराडोत्र
 रे ॥ ॐ प्रणीतस्थापनं ॥ ॐ विष्णो
 रतमसि ॥ ॥ पुनः पूज
 नं ॥ ॐ ब्रह्मरो २ ॥ ॐ प्रजापत
 ये २ ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो २ ॥ ॐ
 ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ ॐ विष्णवे २
 ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ प्रभ्यो २
 ॥ ॐ ब्रह्मराय २ ॥ ॐ प्रपापतये
 २ ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥ ॥ कुराडोत्र
 रे ॥ ॐ प्रणीतस्थापनं ॥ ॐ विष्णो
 रतमसि ॥ ॥ पुनः पूज

लभूषणं सपु मलकृष्णाजि
नहो मद्रक्रीहिणात्रादिदक्षि
णावतेवा ॥ ॥ नृभुक्षणां ॥ ॐ
देवस्यत्वा ॥ ॥ विद्याप्रतिभा
लंभतं स्पृहोत् ॥ ॐ जोजोजो
तकस्रं वाजेहवामहे ॥ स
खायः इन्द्रमृतये ॥ ॥ पवित्रदे
दनं ॥ ॐ पवित्रे स्थो वै लक्ष्मी
वितुर्वः प्रसवः उत्पुनाम्यदि
देवापवित्रेतासूर्यस्यारश्मि
भिः ॥ ॥ पवित्रवक्षतं ॥ ॐ वि
होरराटं ॥ नृक्षणात्रे विद्याः
य ॥ ॥ ततः प्रोक्षणीपात्राभुक्ष
णां ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ ॥ प्रतर्पणां
॥ ॐ प्रत्युष्टं रक्षाः ॥ ॥ कुशेन
समार्जनं ॥ ॐ अनिसितोसि ॥
मद्रिरापूरतां ॥ ॐ आपोहिष्ठा
॥ ॥ त्रयोहारतां ॥ ॐ देवीरापो
ऽमयेगुवोऽमयेप्रवोग्रऽम
मयप्रजनयतामेयजपतिः
७ वातं यजपतिदेवयुवम ॥ ॥

रुदिगारात्रये ॥ ॐ युष्माद्देवता
तवत्रत्येययमिन्द्रमवृणीध्वत्र
येपोक्षितास्थ ॥ ॥ अग्निसिंचने
॥ ॐ सवितुस्त्वाप्रसवः उत्पुनाम्यदि
देवापवित्रेतासूर्यस्यारश्मिभिः ॥
आत्माभुक्षणां ॥ ॐ सवितुर्वः प्रसवः
उत्पुनाम्यदिदेवापवित्रेतासूर्य
स्यारश्मिभिः ॥ ॥ सर्ववस्तुपवित्री
करतां ॥ ॐ देवायकर्मतोसुख
ॐ देवयजायेद्वोभुक्षाः ॥ परा
जयूरिदं कस्तुभूमि ॥ ॥ म
संचरेप्रोक्षणीपात्रप्रतिप्रः
तातयोर्मध्येविद्याय ॥ ॥ नृ
ज्यत्वासीचरुत्वालीसभुक्षणां
॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ ॥ प्रतर्पणां
ॐ प्रत्युष्टं रक्षाः ॥ ॥ कुशे
नसमार्जनं ॥ ॐ अनिसितो
सि ॥ ॥ आप्यत्वात्वाप्य
विद्याय ॥ ॐ महिनाम्योपि
वैव्रीदाऽस्यिद्वैमेदेहि ॥
वृषत्वापिकनीनकभ्येदेहि
५ अग्निचक्षुमेदेहि ॥ ॥

ततः च हविषा न॥ ततः ल ग म ह
रां॥ ॐ नमो नमसि वि नु ति दे वा
आ शा न त्वो दा ना य त्वा व्या ना य
त्वा॥ दी र्घा म नु प्र मि ति मा यु पि
आ न्दे वो वः स वि ता हि रा य पा णिः
प्र ति गृ ष्णा त्व दि दे वा पा णि ना
व क्तु र्वा म ही ना म्प यो सि॥ ॥
ततः ल ग ति री क णं॥ ॐ नमो दि त्तो रा
त्वा सि वि षो वे षो॥ स्रु ज्ज्वा
द चै त न्वा च क्तु र्वा न्प य मि
॥ ॥ उ द र व ले त त रा द् लं ति धा य॥
ॐ नमो त्त त्वा र सि का चो वि ष
धु नं दे व वी त ये त्वा ग्ना मि॥
॥ सु रा ल सा दा य॥ ॐ नमो ह रा ना
सि वा न स्य त्पः स ५ इ दं दे वेः
भ्यो न विः॥ ॥ सु रा ल उ द
र व ले स्या य॥ ॐ नमो मी ष सुः
रा मि म मी ष॥ न वि क्तु दे हि
न वि क्तु दे हि॥ ॥ कू द नं॥ ॐ
नमो नमो सि म न्द्र जि क ५

इ ष मू र्ज सा व द त्व या न य ६
सं धा त ६ सं धा तं॥ ॥ नमो
त रा द् लं ति धा य॥ ॐ नमो व
ष वृ षे म सि प्र ति त्वा व ष वृ षं
वे त्तु॥ ॥ प्र बो त नं॥ ॐ नमो त ६
र वः प रा द् ल ५ प्र रा त यो॥ ॥
स्या ल्पानि धा य॥ ॐ नमो त ६ र
दी वा यु र्वा वि वि न त्तु॥ ॥ न
रा द् लो भु वा रां॥ ॐ नमो वः स
वि ता हि रा य पा णिः प्र ति गृ
ष्णा त्व दि दे वा पा णि ना॥
॥ ॥ किं चि त्त रा द् लं किं ने त्त ॥ दे
वे भ्यः सु न्द्र ५०॥ तो मा न्य दी
ति र उ द न रा द् लं किं धा य॥ ॥ ततः
पू षा पू ज नं॥ ॥ नमो न रा ना वः
का पो द ल जो द किं न त य॥ ॐ
र द्रा य त्वा यु र्वा प्रो द्वा मि॥ ॐ
पौ षे त्वा यु र्वा प्रो द्वा मि॥ ॥ नमो
र म न्ये जो त्वा री ति धा य॥ ॥

पुनः बरु स्यात्सी पूजनं ॥ ॐ श्री
 तन्माय नमः ॥ ॐ भद्रं वा जायतां
 ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ ॐ जगदग्न
 ये नमः ॥ ॐ वसिष्ठाय नमः ॥ ॐ कश्यप
 पाय नमः ॥ ॐ अत्रि नमः ॥ ॐ बृहस्प
 ते नमः ॥ ॐ विश्ववेदे नमः ॥ ॐ सदाशिवाय नमः
 ॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥ ॐ प्रजापते नमः
 ॥ ॐ देवान्य-श्रीविः श्वारूपाणि
 परितो बभूवुः ॥ यत्का मा सोऽनु
 हसस्य नोऽसुखं यत् ॥ ॐ
 सपतये रयीणां ॥ न विनं
 गीत्या ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः
 बरु स्यात्सी प्रति कु रात्र सुवि
 शयनं ॥ ॐ इषे त्वां ज्ञेया ॥ ॥
 कु ले नाव ज्योतिनं ॥ ले अरणा
 र्थं ॥ ॐ गारुड हैतां ॥ ॐ सुप
 ते ताऽसु स गद द्वा ॥ ॐ सिवे दि
 व्ये ॥ यो रूपाणि प्रति सुच

[illegible]

॥ पठ मन कुरा मा वा य ॥ त्रुते दः
री कि या मा र ते र ॥ वृते न ॥
ॐ यो निक ल ना य स्वा हा ॥ ॐ
दो न स्य यो नि र सि क्ष न स्य
ना भि र सि ॥ मा ता हि ६ सी मा
मा हि ६ सी : स्वा हा ॥ ॥ ॐ ग श्री
जा ना य स्वा हा ॥ ॐ ग श्री ५ प्र
स्यो ष ष्ठी नां ग श्री व न स्य ती
नां ॥ ग श्री वि न्य स्वा भू त स्या
ते ग श्री ५ प्रजा पति स्वा हा ॥
॥ पुं न व ना ज स्वा हा ॥ ॐ स्वः
स्ति प श्वा म नु जे टे म स्त र्था
य च न्द्र म सा वि व ॥ पु न द्य ष
ता य ता जा न ता सं ग वे म हि
स्वा हा ॥ ॥ ॐ स्त्री म ती न य
ना य स्वा हा ॥ ॐ मा हि र्मु र्मी
॥ ॥ ॐ जा त क र्मी रो स्वा हा ॥
ॐ का य स्वा हा क र्म स्वा हा क त

म स्मे स्वा हा पि मा की ता य स्वा हा
म नः प्रजा पतये स्वा हा चितं वि
हा ता या दि त्थो स्वा हा दि त्थे म हो
स्वा हा दि त्थे मृ द्दी का ये स्वा
हा म र स्त त्थे स्वा हा म र स्त त्थे
पा व का ये स्वा हा म र स्त त्थे
रु त्थे स्वा हा पू र्णे स्वा हा पू र्णे
प्र प ञ्चा य स्वा हा पू र्णे नं वि
षा य स्वा हा त्व ये तुरी पा म स्वा
हा त्व ये पु रू रू पा य स्वा हा वि
ज वे स्वा हा वि ज वे नि भू य पा
य स्वा हा वि ज वे शि पि वि ष
य स्वा हा ॥ ॥ म हा मृत क
ना शा य स्वा हा ॥ ॐ त्व म ग्रे
दु मिः ॥ ॥ ॐ नि ष्पू म ना य
स्वा हा ॥ ॐ म हा य हा वी ५ प्र
न ये गि रा गि रा वे द क्ष म ॥
प्र प व य म मृ तं जा त वे द त
पि यं मि त्र न ष ६ सि ष ६ स्वा
हा ॥ ॥ ॐ सु भा वे ना म

रागा य स्था हाः॥ ॐ प्राणा य स्था
 हा पा ना य स्था हा वा ना य स्था हा
 व क्षु षे स्था हा ओ ना य स्था हा क
 दे स्था हा म न से स्था हा आ ॐ फ
 व प्रा ना य स्था हा या त फ र सि
 नी ॥ ॥ ॐ सु नै प्रा ना य स्था हा
 ॥ ॐ प्र न प ते ॥ ॥ ॐ पू व सि रं
 म न स्था हा ॥ ॐ सु व र्ण ॥ ॐ
 डा क र गा य स्था हा ॥ ॐ मे र्ण
 नं दि को ५ प्र र तिं ५ णि या के
 न र मृत जा त रिं ॥ क वि ६ म स्था
 ज म ति थिं ज ना ना म म ना ना
 वं ज न य त दे काः स्था हा ॥ ॐ क
 र्ण मे दा य स्था हा ॥ ॐ म दं क र्ण
 मिः श्रु त या म दे का म दं प ले य मा क्ष
 मि र्ण ज नाः ॥ स्थि रै र देः सु दृ ष्ठा
 ॐ म स तू मि र्ण ले म ह दे व हि तं
 य वा युः स्था हा ॥ ॥ ॐ व्र त व क्ष
 म स्था हा ॥ ॐ व्र तं क र्ण त व्र त

क र्ण त मि र्ण मि र्ण हो व न
 ल्य मि र्ण दि यः ॥ दै वि मि र्ण य म
 ना म दे सु म्प दी का म मि र्ण ये व
 र्णो यो य इ श ह म ६ मु ती र्णो
 अ स द से स्था हा ॥ ॥ ॐ गा य ती
 प्रा ना ना य ॥ ॐ व्र ते न दी क्षा
 मा प्रो ति मि र्ण मि र्ण दि द कि र्ण
 द क्षि र्ण ॥ ॐ मा मि र्ण मि र्ण
 य या न्द्र ॥ स्था हा ॥ ॥ ॐ मे र्ण ला
 मा न न व स्था हा ॥ ॐ उ दु तं म व
 रु णा पा श म म्प द वा वं मं कि म
 ज्य म तं म था य ॥ प्र था व य
 मा दि त्या व्र ते त वा ना ग सो ५ म
 दि त ये स्था म स्था हा ॥ ॐ म मा
 व ते ना य स्था हा ॥ ॐ म्प क र्ण ॥
 ॐ मि र्ण हा य स्था हा ॥ ॐ तं प ली
 मि र्ण ग दे म दि काः पु रं म्प रि मि
 र त वा हि र रा ये ॥ ना कं र ५
 नाः मु क्त त म्प लो के त मि र्ण

[illegible]

मनोज्ञ तिर्जु षता माज्य स्य नृ
हस्पती यत्तमिमन्त नोत्तरिष्ट
यद् ५० समिपद ध्यातु ॥ विश्वे देवा
सः इह मादयन्तामि २० प्रतिफल
ता ॥ ॥ ततोऽग्रे ध्यानं ॥ ॐ प्रे
रुतः प्रदीपार्चिः शक्तिरुक्तो
रुता तनः ॥ कुराडा कारे द्विक्क
श्वे प्रज्वलित्वा वक्तुतिः ॥ संप्र
वर्ग भवे जिह्वा श्रुत श्रुत दक्षि
रोकरे ॥ स्थापनती स्थिता नाप्रे
श्रागदशान्तिकारकः ॥ ॐ स
प्रये ध्यानपुष्पं नमः स्थापन ॥ प्र
ष्टणदशमसिद्धिमादाय ॥ ॐ स
सिद्धिगिन्दुवस्यतस्तुते वैष्ण
य यतातिथिम् ॥ श्रीसिंह व्याख्य
हितम् ॥ ॥ चोद संजुरुयात् ॥ ॐ
नदेवाग्निस्तदादित्यस्तवायुस्त
दुर्जनमाः ॥ तदेव शुकं तदुत्तमा
प्रापः संप्रजापतिः स्थापनम्

दमहत्तं बल ग मुक्ति रा मि य मे
 स मा नो य म स मा नो नि च खाने
 दमहत्तं बल ग मुक्ति रा मि य मे स
 व न्दु य्य म स व न्दु नि च खाने दम
 हत्तं बल ग मुक्ति रा मि य मे स जा
 तो य म स जा तो नि च खानो त्क र्मा
 मि रा मि ॥ ॥ दीप ॥ ॐ ते जो मि ॥ ॥
 जला क्ष ते न वलि ॥ ॐ सु ध्य वो ज
 द धि व क्ता प्पु थ मो दे यो मि ष क्ता
 मत क्ता उ चो न त्या य ॥ स गु रा धि
 य ॥ प्रति क्ता ॥ सु धा य ॥ ॐ का रा डा क
 रा ता त्पु रो ह ती प रु षः प रु ष स्य रि
 ॥ र का नो ह वै प्र त नु स ह लो रा ण
 ते न च ॥ ॐ दी प्ति यु क्ता य व ला य त
 र्च मे ॥ सु प्र भा क्ता य स ह मा सु थो
 जीवः शर द श त म् ॥ ॥ त तः स्त्रा
 न कार येत् ॥ पू जानु क्त म क ल
 शे न स्त्रा प येत् ॥ पू र्वा दि क ल
 मो द क शं वि क्त को सु वि दि त

कारणादेवस्नानं कारयेत् ॥ अथ
चतुस्त्विति ॥ ॥ वायुविशेषतः ॥
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ फलप्रतिष्ठा
का ॥ ॐ छाः फलितरी ॥ ॥ लाजा
॥ ॐ नवजविष्णु ॥ ॥ इक्ष्वाकु ॥
ॐ दिव्या पुष्पाय ॥ ॥ देवस्य मू
लमंवे शां शतं तास ह सां ता
कमराडलु शां तेज तं पातयि
त्यो म्ना पयेत् ॥ अथ पात्रोद
के नाभ्युक्षणात् ॥ अथ जोहि
षा ॥ ॥ इति देवस्नानवि
धिः ॥ ॥ ततो विश्वकर्मा पू
जितं ॥ ॐ विश्वकर्मा शोडश
सासनं ॥ पुष्पं ॥ एवं नन्द
नसिन्दूरपद्मोपकीर्णपुष्पं
॥ ॥ इति कृत्वा जलमिति
कालस्तद्विद्य ॥ ॥ मिखाक
नके ॥ ॐ शुभनिवृत्त्यर्थं

अथ चरित्रपरितस्कुषः ॥ रोच
ने रोचनादिविः ॥ ॥ वस्त्रेण
देवमाद्यादयिन्ता ॥ चन्दन
सिन्दूरमगुणाणीति ॥ मे
फलाहारतिष्ठतिष्ठा ॥ ॥ मूला
वार्थेणार्थं नाभ्युक्ष ॥ यजमा
नेन तां तापुक्षेपतः ॥ गिरि
का लेन देवस्य वा ॥ विधि
ने भलं माय नमराडपद्मि
भ्रासणिवायद्रासनेस्था
प्य ॥ ॥ ततो वित्तं नो
यनं ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ वृ
क्षयदानं ॥ ॐ भुवः
स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥
ॐ तः स्वाहा ॥ ॐ नमः शंभवाय
वे ॥ ॥ वायु ॥ इति वित्तं नो
यनं ॥ ॥ अथ देवदशभिर्भाका

रघेन॥ॐ यो न क ल्या य स्या॥
ॐ स्वयं यो न क ल्या य स्या॥
मिरमि॥ मन्त्रा हि ६० मिश्रा मन्त्रा
हि ६० सिः स्यात्॥ ॥ च तेन॥
ॐ नृपदाना य स्यात्॥ ॐ व
स तेन॥ नृपदाना देवा व स-
नाः॥ रथं त रेणा ते जसा ह विरि
त्रे व यो द धुः स्यात्॥ ॥ ॐ की
र्ष्य प्रदाना य स्यात्॥ ॐ हे तो म
त्रे विजय हा ति यो निं प्र वि श
ति दि द्रियं गा भोजन पुणा कृत
उत्सृज हा ति ज स तां स्यात्॥
॥ ॥ ॐ रक्षा प्रदाना य स्यात्॥ ॐ
नृज विष्णु दा॥ ॥ ॐ गभा ध्या
ना य स्यात्॥ ॐ गभी रं य स्यात्॥
॥ गभी रं य स्यात्॥ ॐ गभी रं य स्यात्॥
॥ गभी रं य स्यात्॥ ॐ गभी रं य स्यात्॥
ॐ पुं नृपदाना य स्यात्॥ ॥

ॐ सति पत्न्या मनुचेर मसूय्या
यत्तद मसा विव॥ पुनर्द यो नाय
ता जानता म गजे म हि स्यात्॥ ॥
ॐ श्री मन्त्रे न य ना य स्यात्॥ ॐ
मा हि म् स्यात्॥ ॥ ॐ जान क
र्म रो स्यात्॥ ॐ का य स्यात्॥
॥ क ल्पे स्यात्॥ क त म म् स्यात्॥
॥ स्यात्॥ वि सा धी ता य स्यात्॥
॥ नमः प्रजा पतये स्यात्॥ चि
त्रं विज्ञा ता या दि तये स्यात्॥ दि
तये म ह्ये स्यात्॥ दि तये सु मः
डी को स्यात्॥ मर स्य तये जा व
का ये स्यात्॥ मर स्य तये क ह्ये
स्यात्॥ पू र्णे स्यात्॥ पू र्णे प्र
पत्न्या य स्यात्॥ पू र्णे न र स्यात्॥
य स्यात्॥ नृ प स्यात्॥ नृ प स्यात्॥
री पा य स्यात्॥ नृ प स्यात्॥
पा य स्यात्॥ विष्णु व स्यात्॥

विष्णवे नि भूय पाय म्हा हा ॥
विष्णवे नि वि वि ष्टा य म्हा हा
॥ ॥ वसु उ ले ॥ कुश न नाही
दे दत ॥ ॐ दु प दा दि व ॥ ॥ ए
ष्ठा कल शा भि षे क ॥ ॐ दे
व स्य न्वा ॥ ॥ ॐ स द्य सून
क न शा य म्हा हा ॥ ॐ न म
गे द्यु मिः ॥ ॥ शु चि जो र ता
ग्वा ले ख य म् गु लि धि जा
न य ॥ ॐ नि पू म ता य म्हा हा
॥ ॐ य ता य ता को ५ शु म मे
गि रा गि रा च दे क्ष मे ॥ प्र पु व
म स मृ तं जा त वे द सं पि यं
मि त्त न म ६ सि ष ६ म्हा हा
॥ ॥ पु त्रा ला शा व पा द स
त हो म के ॥ ॥ ॐ द्यु न प्रा
श नं ॥ ॐ द्यु न प्रा श ना म

म्हा हा ॥ ॐ ते जा सि ॥ ॥ नाम
कर रं ॥ ॐ नाम कर रं य म्हा
हा ॥ ॐ प्रा रा य म्हा हा ॥ पा ना
य म्हा हा ना य म्हा हा ॥ च क
षे म्हा हा श्री ज य म्हा हा वा वे म्हा
हा स न से म्हा हा ॥ ॥ य था दे व
या ये ल न ना म नो या वि य ॥
॥ ॐ फल प्रा श ना य म्हा हा ॥ ॐ
याः फ लि ती ॥ ॥ सि प ति ति
न्वा ना स व ने न य ॥ ॥ ॐ म
ने प्रा श ना य म्हा हा ॥ ॐ म
न प ते ॥ ॥ च रु शा ना ना प
च ग्रा म या य के ॥ ॥ ॐ नू
डा क र्णा य म्हा हा ॥ ॐ मू र्ति
नं दि के ५ शु र ति पृ थि न ना ना
मा म ना वा नं ज न य न दे वाः
म्हा हा ॥ ॥ लु यो ल न म्हा
ये के ॥ ॥ ॐ क र्णा भे द ना

यस्याहा ॥ ॐ मद्रं कर्णाभिः
एतु घामदेता मद्रं परोमाक्षमि
यजिजाः ॥ स्थिरै रं भै मद्रु
वा ॐ मद्रुभिर्विद्य शैमहिद
वहिनं यदा पुः म्माहा ॥ ॥ लु
मुलुन रु सपत प्पारुते ॥ म्मा
परगितय ॥ ॥ ॐ व्रतवन्धना
यस्याहा ॥ ॐ व्रतं कुरुत व्रतं
कुरुतामिर्विद्यामिर्विद्यामि
वने म्मातिर्विद्यः ॥ दैवी वि
यमना महे सुसुदी काम
मिष्टयेव वी ॥ ॐ यद्वता हमा
६ मुनि आ नो ॥ सुमह मेसा
हा ॥ ॐ व्रतिविद्य ॥ फरातिन
य ॥ ॐ व्रतार सिद्रुम विनार
सिद्रु ६ रुवे सुहव ६ म्मा

सिद्रु म्मा ॥ म्मा मि शक्रं पुह
रुने सिद्रु ॐ म्माहिने मद्रु वा
प्राप्तिद्रुः म्माहा ॥ ॥ गाय
त्री प्रदानं ॥ म्मा म्मा नो ॐ
नयाना जो नानको बाधे के ॥
ॐ गायत्री प्रदानाय म्माहा
॥ ॐ व्रते नदी आमा प्रोतिदी
ॐ आ प्रोतिदक्षिणा म्मा ॥ दक्षि
णा म्मा मा प्रोति म्मा म्मा
सत्य माय ते म्माहा ॥ ॐ म्मा
मा व्रतं ना म्माहा ॥ ॐ
मा कुरुते म्मा ॥ ॥ विनाहा ॥
ॐ विनाहा म्माहा ॥ ॐ
तस्य म्मा मिरुग दे मदे
वीः पुत्रै म्मा मिरु न काहि
रुगेयः ॥ नार्क ग म्मा नाः सु
हव म्मा लोके न ना ये पृष्ठ

ॐ सुविरोचने दिवः स्वाहा ॥ म
धुप कस्तूरने तपः ॥ कुशति
लं शिवा ॥ ॐ सुद्युता राह
॥ सुद्यादि ॥ यजमानस्या मुको
देशा मुक देवा यमु मुकी कन्या
स प्रद दे ॥ दक्षिणा ॥ ॥ शतवृ
द का फ्र निनिस लानं व्या य ॥
ॐ पु जाप ते न च दे ता न्य न्यो वि
न्या रुपा शि परि ता व भू व ॥ य
का मा सो जु ह म स न्नो ॥ सु
स्तु व य ६० ॥ स्था म प त यो रणी
गां ॥ ॥ शतवृद कान को रता म
के ॥ ॥ गुरु स्ते ती ॥ ॥ लवि
भा ॥ फ्र ति नि द्या ये ॥ ॐ आ ता
र मि त्र म वि ता र मि त्र ६० ॥ हवे ह
वे सुत व ६० ॥ मूर मि त्र म ॥ ॥ फ्र या
मि श कं पु र ह त मि त्र ६० ॥

सि नो म द्य ता का न्ति ३ ॥ ॥
मा स ये डे ये डे या ये ॥ आ हो
र म च म भ्मान म र मे व च ६
स्थि रो भ व ॥ अ भि ति कृ प त
न्य तो व वा ध म्भ प त ना म तः
॥ ॥ पु सा द पि ति ति ते ॥ ॐ पु
जा प ते न च दे ता न्य न्यो वि
रुपा शि परि ता व भू व ॥ यः
का मा सो जु ह म स न्नो ॥ अ
स्तु व य ६० ॥ स्था म प त यो रना
म ॥ ॥ जो हा मा न गा वे ॥
ॐ न व वा यो वृ ह स्प ते च द्य
अ मा त र भु त ॥ अ पा ॐ स्था
वृणी म हे ॥ ॥ लु की त न ति
ने के ॥ ॐ हि रा य ग क र्मः स
म व र्त्त ता गे भू त म्य जा त
प ति र क मी र ॥ म दा ध्या
र ॥ वि वि द्या मु ते मा क स्ते

देवाय नमः विष्णवे नमः ॥ ॥
वाङ्मनस्यके ॥ ॥ अनितिनवा
ये ॥ ॐ नमः शंभवाय च ॥ ॥
वायेभराडी ह्यनेतयो ॥ ॐ
मातृपितृविस्मृताय नमः
हा ॥ ॐ मातेव पुत्रं पुत्रिणीपु
शकापति ६ मेयो नाव
भारुबा ॥ नासि चैदेव
मृत्तुभिः संविदानः पु
पतिर्विचक्रमाधिपुत्रं
नुस्वाहा ॥ ॐ वनं पुत्रं
हा ॥ ॐ सुप्रकजं जाम
हे ॥ ॐ प्रतिष्ठाप्ये स्वा
हा ॥ ॐ मनोज्ञं निजं प्रता
मा ज्ञम्य वृहस्पतिर्ध
नमि संततो विष्णुं च

२४
वृहस्पतिमंदजातु ॥ वि
श्वेदे सः सः सः सः सः ता
मौं ३ पुतिदा स्वाहा ॥ ॥
इतिदेव शक्तिया ॥ ॥ त
तो यथा देवस्य जीवन्मासः ॥
कुरातिलजलं गृहीत्याः ॥
अद्यादिवा नमः ॥ यथा देव
स्य जीवन्मासमहं करिष्ये
॥ ततो देव शोभो नं कार
येत् ॥ ॐ शिवतन्त्राधिपत
ये स्वाहा ॥ ॐ नमः शंभवाय
च ॥ शिहसि ॥ ॥ इति ॥ विष्णु
तन्त्राधिपतये स्वाहा ॥ ॐ
इदं विष्णुः ॥ ॥ नाभौ ॥ ॐ
आत्मने तन्त्राधिपतये स्वा
हा ॥ ॐ ब्रह्मवदानं ॥ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं आपते जो वाया
कातलाय म्याहा ॥ ॐ शि वो
नामा मिम्य धिति नो पिता
नमस्तो ॥ अस्तु मा माहि ६० श्रीः
॥ तिवर्तं या म्या युषे त्राद्या य
पुजनता य रा य म्या बाय
मुपजा म्ना य मुवी यी य ॥ इ
ति तत्व सो चनं ॥ ॥ ततो षडं
गेन शो धनं ॥ इति ॥ ॐ यज्जा
गुनो दुरमुदै व तदु मुपुस्य
तन ॥ निः ॥ दूरदु प्रभुयो
निषि यो निरे कं न-मम
नः शिव मङ्ग ल्यु मङ्ग ॥ ॥
शिरमि ॥ ॐ मह म्म शी ॥ नि
रता ॥ ॐ अ म्मः संभृतः

पुत्रि हो र सा च्च विश्व कर्म
राः समवर्त ता नो ॥ तस्य च्च
दृष्टा विद च्च द्रु प मे तित न्मत्य
स्य देवत्व प्रो जान म्म ॥ ॥
कवच ॥ ॐ आभुः शि रा नो
वृष भोन भी मो द्य ना द्यनः
क्षे भ शा म्मर्ष शी ना म् ॥ रं
ऊद नो मि मि च्च ६८ कवीरः
सत ६० मे ना ॥ अ ज य म्मा क
मि न्द्रः ॥ ॥ तेन ॥ वि त्ना द्य
रु मि व न्द्रु मो म्म म्म ॥ य
इ च्च य न प ता व ॥ इत म्म
॥ वा त्म न्द्रु नो यो ॥ अ म्म र्क्ष
ति म्म ना प्पु जाः पु वो म्म पु र्क्ष
जा वि रा ज ति ॥ ॥ अ म्म ॥ ॐ
न म्म म्म रु द्द्र म्म च्च व ॥ ६
नो न ॥ इ व वे न म्म ॥ ॥

वा रु भ्या सुतते नमः ॥ इ
त न ५३० शो धे नं ॥ ॥ त
त प्रा रा प्र ति द्य ॥ ॐ अ म्भ
प्रा रा प्र ति द्य म च म्भ
स वि द्य रु द्र अ ष षः अ
ग्य रुः सा मा नि द्य दा मि
चि द्र पा प्रा गो त कि दे व
ता ५ मु क दे व म्भ प्रा रा प्र मु
प ने नि ति यो गः ॥ ॥ ॐ
आं ह्रीं क्रीं वं रं वं वं रं
षं मं हं मो हं हं सः आं
ह्रीं क्रीं भ मु क दे व म्भ प्रा
रा इ ह स्थि तः आं ह्रीं क्रीं
भ मु क दे व म्भ जी व ह ह
स्थि तः आं ह्रीं क्रीं भ मु
क दे व म्भ स र्वे ति मा मि व

अ न भ ५३० शो धे नं ॥ ॥ त
इ हा ग म्भ सु र्वे ति द्य रु द्र
हा ॥ त तो दे व म्भ सु ले न श
त म्भ स ह म्भ म्भ द श म्भ
शो धे ये त् ॥ ॥ दे व म्भ सु
ल म च्चे शा रु तिं ॥ ॥ ला
जा स ह पू शा रु ॥ ॐ पु रा रु
र म्भ वि द्य पो वि र पु तिं
व द पा ष ष वि वि श्री व द
न म्भ ॥ धा मे र यं अ न्द्र म्भ
मि द्य धा मि द्य म्भ सु की रा
मो ५ अ न्द्र दि श्म य ज ते ॥
प्रो अ शा रा मा द या द ष
तो व जो सि म्भ हा ॥ प्र
नि द्य ॥ ॥ जी व लि के

ने मन्त्र ॥ ॐ प्राणा न्ये हि न
आजीवं आमुर्दे हि सु तं
कृतां ॥ विद्या तान सु खं दे
हि दे हि मे लघु सांप्रतं ॥ ॥
यथा सक्ति त पं को प चाहे
देव पूजनं ॥ यान् कं जति
यूपदी पत्रै वेद्य जपस्तो
त्र दक्षिणा अथ गन्धादि ॥
इति देव पूजा ॥ ॥ अथ
विश्वकर्म पूजनं ॥ यज
माने न ज्ञा भ शि उ अरो स्था
प्य ज लेना सिंचे तं ॥ पूजा ॥
ॐ विश्वकर्म शो इदं सा सनं
नमः पुष्पां ॥ एवं हस्तार्चनं
न्यत य ज्ञो पवित्र पुष्पं यूप
दि पंस्तो ॐ ॥ विश्वकर्म न
मस्तुभ्य नै लोक सृष्टि का

रक ॥ यथा पुष्पं कुरु भ्रात्र
विश्वकर्म नै सो लुने ॥ अथ
गन्धादि दक्षिणा शीर्षादः ॥
॥ आहुति ॥ ॐ विश्वकर्म वि
मनाः आदिता पाप्माना विश्व
ता परमा सह कृ ॥ तेषां विति
समिधा सदति पत्रा स प
कृष्णी नृ प रः एक माहुः स्वा
हा ॥ इति आहुति ॥ ॥ अथ
स्थिरं कारयेत् ॥ दद्या चार्थे
न श्रु वै स्पृशेत् ॥ यजमाने न
कुशे न ॥ करमी न ज्ञा भ शि
न ॥ ॥ वाक्य ॥ भ्राता ग्राह
तादि ॥ ॐ यजमानं स्या मुक
का र्थं निमित्तं यं स्थि रो म
व ॥ ॐ पुष्टि नो सि दे वे श सु
प्रति ह्ये म कुरु य ॥ सावि
त्यं प्रति पद्यते यजमानो

सुवर्द्धये ॥ शत्रो सुदिपदे
नित्यं रात्रो सुचचेतुष्यदे ॥
रात्रो सुसर्व लोका नां रात्रो
रात्रा चैव च ॥ यजमानस्य
भृत्यो यं पशुपत्रसकां च वाः
॥ रक्षतु सर्व लोका नां देव
भ्यां न सोक्तैः ॥ यावत्तु तस्य
ते मूर्ध्नि ॥ व्यजेषु वरवर्णिनि
॥ तावद्वर्ष सहस्राणि ॥ विष्णु
लोके महियते ॥ हेमरक्षप्र
दाने न पुण्यं कोटि शुभां शिवं
॥ यावच्चंद्रमूर्यं च ॥ मे
दिनी सपुत्रा गराः ॥ यावदा
काशगङ्गा च ॥ तावत्संवत्सरे
रो भव ॥ वेद ॥ ॐ ॐ ह्यिरो
भव विदुः ॥ ॐ ॐ आमुमि वेद

सर्व ॥ पृथुर्धनं सुखं द
त्तममेः पुरिषा हनं ॥ पृ
तिष्ठा ॥ लाजा सह आहुति
॥ ॐ ॐ ॥ प्रतिष्ठाये स्वाहा ॥
ॐ ह्यिरो भव ॥ ॐ ॐ ॥ ॥
मेक आहति प्रतिष्ठा ॥ ॐ स
नो जूतिः ॥ इति देवप्रतिष्ठा
विधिः ॥ ॥ अथ सा पू
जा ॥ पद्मकामनकोकी चो
पा ॥ आसमा नये ॥ यजमाने
न निष्पद्यन् ॥ ॐ ह्यो ह
गङ्गा लगनां वैष्णवी सिद्ध
महत्तं वल गमुक्तिरसिध
ममा लो निचला नेदम हं
तं वल गमुक्तिरसिधमे
सममे नो यमममानो निच
रकनेदमहत्तं वल गमुक्ति
क्तिरसिधमे सर्वं च ॥